नई दृष्टि, नया विश्व

(आंतर विज्ञान-वीतराग विज्ञान की सर्वग्राही, सर्वदर्शी समझ)

संकलन-संयोजन :
डॉ. स्वामी शैलेषानंदजी

जय सच्चिदानंद संघ

❑

जय सच्चिदानंद संघ

www.jssvitragvignan.org

प्रकाशक

जय सच्चिदानंद संघ की ओर से

सुधीर बी. शाह (सकल संघपति)

36, पार्श्वनाथ चेम्बर्स, रिज़र्व बेन्क के पास, इन्कमटेक्स ओफिस के सामने,

आश्रम रोड़, अमदावाद-380 014

✆ : (079) 26644101 E-mail: info@jssvitragvignan.org

website : www.jssvitragvignan.org

©

सर्व हक़ प्रकाशक के स्वाधीन

जय सच्चिदानंद संघ

जय सच्चिदानंद संघ

मूल्य : *'परम विनय' और 'मैं कुछ नहीं जानता' यह भाव*

आवृत्ति	मास	वर्ष	प्रत
❑ प्रथम	जनवरी	2017	2,200

प्राप्तिस्थान

जय सच्चिदानंद संघ
36, पार्श्वनाथ चेम्बर्स, रिज़र्व बेन्क के पास,
इन्कमटेक्स ओफिस के सामने,
आश्रम रोड़, अमदावाद-380 014
✆ : (079) 26644101
E-mail: info@jssvitragvignan.org
website : www.jssvitragvignan.org

अक्रम विज्ञान फाउन्डेशन
8, ज्ञानसागर सोसायटी, बेन्क ओफ बरोडा के
पास, दुधिया डेरी के सामनेवाली गली में,
फतेहनगर, पालडी, अमदावाद-380 007
✆ : (079) 26644101
E-mail: akramvignan@gmail.com
akramvignan@jssvitragvignan.org

❑

इस पुस्तिका में 'बी-भारती कौटिल्य' टाइप का उपयोग किया गया है ।
यह पुस्तिका CPT के माध्यम से छपवाई गई है ।

: मुद्रक :

चिराग ओफसेट प्रा. लि., अमदावाद-380 022 ✆ (079) 25464747, 25464848

प्रस्तावना

आज एक तरफ आधुनिक विज्ञान की प्रगति से हमें सुख सुविधा के अनेक साधन उपलब्ध हैं, किंतु क्या हमारे अंदर सुख और शांति है ? तनाव, मतभेद, मनभेद, अशांति, आधि, व्याधि या उपाधि से बहुधा जनसमाज त्रस्त है ।

मेरा जीवन कैसे सुखी, सुसंवादित, अर्थपूर्ण और सकारात्मक बने ? मैं अपनी आंतरिक क्षमताओं का कैसे उत्कृष्ट उपयोग कर पाऊँ ? जीवन का हेतु क्या है ? मेरे हाथ में क्या करने की स्वतंत्र सत्ता है ? जैसे कई प्रश्न अनुत्तरित रहते हैं । ऐसे समय में 'आंतर विज्ञान'-'वीतराग विज्ञान' की समझ से एक नई और सही दृष्टि प्राप्त हो सकती है जिससे एक नया आंतर और बाह्य विश्व बन सकता है । आज बाह्य जगत् के कई वैज्ञानिक भी आंतर विश्व के अभ्यास और संशोधन में जुड़े हुए हैं । किसीने ठीक कहा है कि आनेवाला समय आंतर विज्ञान (अध्यात्म विज्ञान) के क्षेत्र में संशोधन और प्रगति का है और उसके ज़रिए मानव समाज बहुत लाभान्वित होगा ।

इस छोटी-सी पुस्तिका में युगदृष्टा, संगमेश्वर, अक्रम विज्ञानी 'दादा भगवान' के निमित्त से प्रकाशित 'आंतर विज्ञान'-'वीतराग विज्ञान' की सर्वग्राही समझ-दृष्टि एवं सिद्धांतों का अल्प अंगुलि निर्देश किया जा रहा है । रोज़ाना जीवन के विभिन्न पहलुओं में कार्यकारी और लाभदायी हो ऐसी सरल समझ के साथ ही जीवन, कुदरत, कुदरती नियमों के रहस्यों और आत्मविज्ञान जैसे गहन तत्त्वों की बातों के संकलन का यह एक विनम्र प्रयास है । इसमें जीवन की दृष्टि में आमूल परिवर्तन लाने की और भीतरी अनंत सुख, अनंत शक्ति खोलने की क्षमता भरी हुई है ।

यह विज्ञान धर्म, ज्ञाति, रंग, मान्यता, राष्ट्रीयता या ग़रीब-अमीर जैसे किसी भी भेद से परे सबके लिये उपयोगी और लाभदायी है । विद्यार्थी हो या व्यवसायी, आमजन हो या विद्वान, सभी को प्रगति के लिये 'आंतर विज्ञान की दृष्टि' सहायक और पूरक हो सकती है । यहाँ न कोई व्रत, जप, त्याग या विधि-विधान हैं और न ही कोई धर्म या संप्रदाय । यहाँ केवल सही और वैज्ञानिक समझ है जो तुरंत ही परिणाम देती है ।

कोई भी जिज्ञासु-मुमुक्षु जन अपनी अंतर यात्रा में आगे बढ़ने, आंतर सुख पाने और विश्वकल्याण में निमित्त बनने के लिये, विशेष वाचन के पुस्तक, दृश्य-श्राव्य सत्संग की केसेट और प्रत्यक्ष सत्संग के माध्यम से अधिक जानकारी-मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं ।

– डो. स्वामी शैलेषानंदजी

(Mo. : 99131 46547 • E-mail: drs.hscrf@gmail.com)

परस्पर

-सुधीर शाह (सकल संघपति)

इस छोटी-सी पुस्तिका 'नई दृष्टि, नया विश्व' में आंतर विज्ञान की सर्वग्राही समझ के लिये लगभग ७६ विषयों का समावेश हुआ है। इस पुस्तिका को वाचक को सरसरी नज़र से नहीं देखना है, इसमें वर्णित मुद्दे जिज्ञासा को जागृत करेंगे। इन सारे मुद्दों को समझ के पतों के रूप में पहचाना जा सकता है ! उनका बार-बार अवगाहन करने के बाद अक्रम विज्ञानी संपूज्य दादा भगवान, प्रकट प्रत्यक्ष ज्ञानी पुरुष पूज्य कनुदादाजी तथा शीलवंत आप्तपुत्रों के निमित्त से आंतरजीवन के गहन-सूक्ष्म विषयों का मर्म खुला हो सके ऐसा है।

समाविष्ट विषय एक पुरुषार्थ योग है। आप्तपुत्र स्वामी डॉ. शैलेषानंदजी व्यवसाय क्षेत्र में आँखों के एक सफल सर्जन हैं। इसलिये ऐसा कहा जा सकता है कि बाह्य व्यवहार में वे आँखों के सर्जन-डॉक्टर हैं पर आंतर-व्यवहार में आंतरिक दृष्टि खोलने के निमित्तरूप हैं।

आज के छिन्नभिन्न मनुष्य के लिये वैज्ञानिक अभिगम से जीवन की सच्ची समझ मिले ऐसी भावना है। जय सच्चिदानंद संघ तथा वीतराग विज्ञान चेरिटेबल रिसर्च फाउन्डेशनने इस पुस्तिका में दिक्‌दर्शित विविध विषयों को स्पर्श करनेवाले परिसंवादों के द्वारा समाज को प्रेरक दिशा दर्शानेवाले विधायक आंदोलन का प्रारंभ किया है।

इस सारे परिसंवाद में प्रश्नोत्तरी के माध्यम से वक्ता और श्रोता के बीच जब आत्मीयता का भावनात्मक सेतु रचता है, तब हमारा आंतरिक वैभव संपूज्य अक्रम विज्ञानी द्वारा और प्रकट प्रत्यक्ष ज्ञानी पुरुष के ऐश्वर्य से चेतनायुक्त तथा उज्ज्वल बनता है।

हमारे 'हूँ' पद से फूटनेवाली भौतिक प्रवृत्तियाँ, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार आदि कषायों के कारवाँ और संबंधों की ऊपराऊपरी क्रीड़ाओं के द्वारा मनुष्य विलुप्त-सा होता जा रहा है। भ्रमपूर्ण मान्यताओं ने मनुष्य को उलझन में डाल दिया है। ऐसे विपरीत संयोगों में मनुष्य को यथार्थ दिशा मिले ऐसा सम्यक् हेतु इस 'नई दृष्टि, नया विश्व' पुस्तिका का है। तो मित्रों, इस 'नई दृष्टि, नया विश्व' पुस्तिका को एक दीप-स्तंभ-दिग्दर्शक समझकर आप अपने आंतरिक जीवन का शुभारंभ करेंगे तो आपको समझ के रत्नदीप का दर्शन अवश्य होगा।

॥ जय सच्चिदानंद ॥

www.jssvitragvignan.org

अनुक्रम

प्रकरण - १ :
विज्ञान ७
- आंतर विज्ञान क्या है ? ८
- आधुनिक विज्ञान से संकलन शरीर-मन-आत्मा ९

प्रकरण - २ :
सुख की खोज में १३
- स्पर्धा और तुलना ? Competition and comparison ? १४
- सप्रमाण और कुदरती जीवन Normal and Natural living १४
- प्राप्त को भुगतें, अप्राप्त की चिंता मत करें १५
- निमंत्रित किए हुए दु:ख ? १५
- कुदरत के मेहमान १६
- चिंता १६
- सुख की चाबी १७
- सुख की दुकान १८
- योग, उपयोग परोपकाराय- Obliging Nature १९
- सबमें 'मैं' ही हूँ १९
- जगत् अपना ही प्रतिघोष, प्रतिध्वनि है (World is our own echo) २०
- Main product-by product २०
- रिलेटिव (व्यवहार) सुख : रियल (सनातन) सुख २१
- जीवन का हेतु और ध्येय २२

प्रकरण - ३ :
व्यवहार-विज्ञान २४
- सुखी, सुसंवादित, दैनिक जीवन की ओर जीवन जीने की कला २४
- टकराव टालिये २५
- एड्जस्ट एवरीव्हेर (Adjust Everywhere) २७
- घर–एक स्वर्ग बनाएँ २९
- पति-पत्नी २९
- माता-पिता-संतान ३२
- संतानों का माता-पिता के प्रति फ़र्ज़ ३२
- व्यवहार स्वरूप ३३
- देनेवाला तो कुदरत का डाकिया है ३४
- मेरे कर्म का हिसाब है, सामनेवाला निमित्त मात्र है ३४
- व्यवहार व्यवहार स्वरूप है, न्याय स्वरूप नहीं ३५
- हुआ सो ही न्याय, हुआ सो ही सही ३५
- भुगते उसकी भूल ३५
- हित-अहित का ख़याल ३८
- स्वयं (Self) ३९
- सकारात्मक दृष्टि (पोज़िटिव दृष्टि) ३९
- काम-व्यवसाय की जगह ४१
- नेतृत्व-Leadership ४२
- वर्तमान समय और युवावय की कुछ समस्याएँ ४३
- संग-मित्र वृंद-Company ४३
- बाहर होटल या लारी का खान-पान ४४
- शीघ्रता से धन प्राप्ति की लालसा ४४
- माता-पिता या अन्यों के साथ झूठ बोलना पड़े ४५
- मोहनीय ४५
- युवावय श्रेष्ठ पूँजी ४५

प्रकरण - ४ :
अपना आंतरविश्व ४६
- मन ४७
- मन के साथ कैसे रहें ? ४८
- मन के विचारों का विज्ञान ५०
- मन का जन्म ? मन के माता-पिता ५१
- मन को वश में करना ? ५२
- भाव मन-कारण मन-चार्ज मन ५२
- चित्त ५३
- बुद्धि ५५
- अहंकार ५६
- अभिप्राय ५७
- मान्यता और मानसिक असरें ५८
- वाणी-परस्पर संवाद की कला और विज्ञान (Art and Science of Communication) ५९

प्रकरण - ५ :
मानवधर्म ६१
- मुख्य चार प्रकार के मनुष्य ६१

www.jssvitragvignan.org

अनुक्रम

- नैतिकता और निष्ठा ६३
- व्यापार में धर्म..... ६४

प्रकरण - ६ :
मानवजीवन एक अद्‌भुत प्रयोग ६५

- प्रयोग-प्रयोगी ६५
- अपनी स्वतंत्र सत्ता कौन-सी ? ६६
- हमारी स्वतंत्रता कहाँ ? ६७
- हमारी स्वतंत्रता-भावसत्ता ६९
- प्रारब्ध-पुरुषार्थ, कर्मफल-कर्म ७०
- चार्ज-डिस्चार्ज (कर्मबंध-कर्म निर्जरा) ७०
- 'प्रतिष्ठित आत्मा', 'आरोपित आत्मा'-'शुद्ध आत्मा' ७१
- सरल, परिणामदायी वैज्ञानिक मार्ग ७१
- व्यवहार सारांश ७२

प्रकरण - ७ :
मैं कौन हूँ ? ७४

प्रकरण - ८
जीवन सार्थकता का सरल मार्ग ७७

- शुद्धात्मा के प्रति प्रार्थना ७८
- नौ कलम ७९
- दोष और दोष शुद्धि का मार्ग ८१

प्रकरण - ९ :
मानव जीवन और कुदरत ८३

प्रकरण - १० :
वीतरागों की दृष्टि से जीवन और विश्व का विज्ञान ८५

प्रकरण - ११ :
अभ्यास, कारकिर्दगी की सफलता के लिये कुछ सुझाव ८८

प्रकरण - १२ :
सुनहरे आप्तसूत्र ९१

विशेष अभ्यास के लिये १००

www.jssvitragvignan.org